कमीने यार ने बना दिया रंडी-2

“दिन में मैं चोरी से जाकर अपने यार से चुदवा कर आती, रात को शौहर से चुदवाती। फिर इंतज़ार करती के कब मेरे दिन ऊपर हों, और फिर मैं अपना प्रेग्नेंसी टेस्ट करवाऊँ। …”

Story By: (shaheen)
Posted: Wednesday, December 25th, 2019
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: कमीने यार ने बना दिया रंडी-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

कमीने यार ने बना दिया रंडी-2

 यह कहानी सुनें

> मगर साथ की साथ मेरे मन में ये बात भी चल रही थी कि यार एक बच्चे के लिए क्या ज़रूरी है कि मैं कोई ऐसा गलत काम करूँ, जिसके लिए मेरी नज़रें मेरे शौहर के आगे नीची हो जाएँ। मेरे शौहर भी तो कोशिश कर ही रहे थे। फिर क्यों मैं अपने ज़मीर, अपने किरदार से गिर कर अपने माथे पर लगाने जा रही हूँ। बेशक मेरे शौहर को पता न चले, पर मैं … मैं तो सब कुछ देख रही हूँ। मेरा परवरदिगार देख रहा है। मुझे लगा जैसे मुझे इस जगह पर सांस लेना मुश्किल हो रहा है।
>
> मैंने अपने आपको आफताब की गिरफ्त से आज़ाद करवाया और बोली- मुझे जाना है।

अफ़ताब बोला- कहाँ जाना है ?
मैंने कहा- घर जाना है।
वो बोला- और ये जो काम हमने शुरू किया है, तुम्हारा बच्चा ?
मैंने कहा- मैं अभी इस सब के लिए तैयार नहीं हूँ।

मैं जाने लगी तो आफताब ने मेरा राह रोक लिया और अपना लोअर उतार कर नंगा हो गया। मैंने देखा कि उसका गहरा भूरा लंड पूरा तना हुआ हवा में अकड़ा खड़ा था।

वो अपने लंड को हिला कर बोला- इसका तो कुछ करके जाओ।

मैंने कहा- मैं इसका क्या करूँ ?
वो बोला- ये तुम्हारे लिए ही तो तैयार हुआ है, इसे अब ठंडा करके जाओ।
मैंने कहा- मैं इसे कैसे ठंडा करूँ ? तुम देखो, तुम्हारी चीज़ है।
वो बोला- या तो इसे अपनी चूत में लेकर ठंडा कर या मुँह में ले या फिर अपनी गांड में ले। जब इसका माल निकलेगा, तभी ठंडा होगा ये।

मुझे आफताब की बात बहुत बुरी लगी। मैं समझती थी कि वो मुझे प्यार करता है, मगर मैं तो सिर्फ उसके लिए एक सेक्स ऑब्जेक्ट थी।
मैंने खीज कर कहा- मुझे ये सब नहीं होता।

तो आफताब एक दम चिढ़ सा गया और मुझे बांह से पकड़ कर बोला- क्यों नहीं होता ? अपने शौहर से चुदवाती नहीं क्या, उसका लंड नहीं चूसती, उस से गांड नहीं मरवाती क्या।
मैंने कहा- हाँ, मैं उसके साथ ये सब करती हूँ, क्योंकि वो मेरा शौहर है।
आफताब बोला- तो फिर यहाँ क्या अपनी माँ चुदवाने आई थी ?

मुझे बहुत गुस्सा आया, दिल तो किया के उसके मुँह पर एक झापड़ रसीद कर दूँ। मगर मैंने अपना गुस्सा पी लिया।

जब मुझे भी गुस्से में देखा तो फिर अफ़ताब थोड़ा ठंडा पड़ गया और बोला- प्लीज़ जान, थोड़ा सा चूस लो मेरे लंड को।
मैंने कहा- देखो आफताब, मैं यहाँ अपने एक पुराने दोस्त के पास आई थी कि शायद वो मेरी कुछ मदद कर दे, मगर तुम तो मुझे कोई रंडी समझे बैठे हो कि अब आई हूँ तो चुदवा कर जाऊँगी। ऐसा नहीं है। तुमने मुझे गलत समझा।

तो आफताब ने एकदम से पलड़ा बदला- ओके ओके, ठीक है, चलो मैं गलत। मगर क्या ये

हो सकता है के अगर आज तुमहरा मूड नहीं है, तो हम कल, परसों या फिर कभी मिल सकें, और जो काम आज पूरा नहीं हो पाया, उसे फिर पूरा कर लें ?

मुझे उसकी बात ठीक लगी, मैंने कहा- हाँ ये हो सकता है। दरअसल मैं आई ही इसी काम के लिए थी. मगर सच कहूँ, मुझे इस तरह अपने शौहर से फरेब करना बड़ा अजीब लग रहा है. तो मैं अभी अपना तय नहीं कर पाई कि मुझे सच में तुमसे करना चाहिए या नहीं। अफ़ताब बोला- ठीक है, फिर जब तुम कहोगी, हम तब करेंगे. मगर अभी के लिए थोड़ी देर तो इसे अपने हाथ में पकड़ ले यार। कब से मेरा लंड तुझ से प्यार करने को तरस रहा है।

मैंने उसका लंड अपने हाथ में पकड़ा और धीरे धीरे उसे हिलाने लगी. तो आफताब ने मुझे बहुत प्यार किया, कई बार चूमा, मेरे मम्मे दबाये, मेरी शर्ट का गला आगे करके, अंदर मेरे मम्मों को देखा, मेरे क्लीवेज को अपनी जीभ से चाट गया वो।

मुझे गुदगुदी हुई, मन भी मचला, मगर अभी नहीं, अभी मेरा मन नहीं मान रहा था तो मैं उसके सभी इसरार ठुकरा कर वापिस अपने घर आ गई। हाँ इतना वादा जरूर करके आई कि अगली बार जब हम मिलेंगे, तो मैं उसे किसी भी बात के लिए नहीं रोकूँगी।

मगर घर आकर मैं पहले तो बहुत रोई क्योंकि मुझे खुद पर ये यकीन नहीं आ रहा था कि मैं इतनी नीच कैसे हो सकती हूँ जो चुदने के लिए अपने यार के पास चली गई।

पर जब मेरे जज्बात शांत हो गए तब मुझे अपने आप पर भी गुस्सा आया कि अगर गई ही थुई तो कर भी आती, क्या फर्क पड़ता था।
सोचते सोचते मैं पागल होने लगी।

कुछ देर बाद मुझ पर सेक्स हावी होने लगा, मैं अपने बेडरूम में गई और अपने सारे कपड़े उतार कर शीशे के सामने खड़ी हो गई और सोचने लगी. सोचते सोचते मैं अपने जिस्म को

सहलाने लगी और सहलाते सहलाते और आफताब की हरकतों को याद करते करते मैं इतनी गर्म हो गई कि मैं अपने हाथ से अपनी ही चूत को सहलाने लगी और तब तक सहलाती रही जब तक मैं स्खलित न हो गई।

मैंने ज़ोर ज़ोर से आफताब का नाम पुकारा. सच में अब मैं उससे चुदवाना चाहती थी मगर पानी निकलने के बाद मैं शांत हो गई।

रात को फिर मुझे आफताब की बहुत याद आई। मेरे शौहर तो अपने बिजनेस के सिलसिले में बाहर गए थे. मैंने रात को 12 बजे आफताब को फोन लगाया.
उसने फोन उठाते ही कहा- कल को आ जा, टिका के पेलूंगा तुझे।
मैंने कहा- हाँ, मैंने भी इसी लिए फोन किया है।
वो बोला- तो ठीक कल को मिलते हैं, मगर घर पर नहीं, होटल में रूम बुक करवा कर तुझे बताता हूँ।
मैंने ओके कहा और कल के बारे सोचते सोचते सो गई।

अगले दिन सुबह 10 बजे ही उसने मुझे एक होटल में बुलाया, मैं भी तैयार हो कर जा पहुंची।
वैसे मैं बुर्के में खुद को अच्छी तरह ढक कर गई थी। रूम में जाते ही उसने मुझे बांहों में भर लिया और उसने मेरी ठुड्डी से पकड़ कर मेरा चेहरा ऊपर को उठाया।

मैंने अपनी आँखें बंद कर ली. शायद वो इसी बात का इंतज़ार कर रहा था। उसने भी बिना कोई वक्त गँवाए, मेरे होंठों को चूम लिया।
एक बार तो मुझे जैसे करंट लगा, उसको भी लगा। हम दोनों छिटक कर दूर हो कर सोफ़े पर बैठ गए।

मैंने अपनी आँखें बंद कर ली. शायद वो इसी बात का इंतज़ार कर रहा था। उसने भी बिना

कोई वक्त गँवाए, मेरे होंठों को चूम लिया।
एक बार तो मुझे जैसे करंट लगा, उसको भी लगा। हम दोनों छिटक कर दूर हो कर सोफ़े पर बैठ गए।

मगर दोनों के दिलों में तो जैसे आग भड़क गई हो। सिर्फ एक चुम्मे से मेरी चूत में जैसे पानी आ गया हो। इतना जोश मुझे आज तक महसूस नहीं हुआ था। फिर तो जैसे हम दोनों एक ही समय एक दूसरे की तरफ मुड़े और दोनों ने एक दूसरे का चेहरा पकड़ा और खुद ही एक दूसरे के होंठ चूमने लगे।

चूमने क्या लगे, चूस डाले … कभी वो मेरा नीचे वाला होंठ चूसता, कभी ऊपर वाला।
और यही सब मैं कर रही थी।
मेरे लबों की सुर्खी उसके लबों को भी लाल कर गई मगर हम नहीं रुके।

उसके हाथ अपने आप मेरे मम्मों पर चले गए और वो उन्हे दबा दबा कर निचोड़ने लगा।
फिर मेरा नकाब खोला, मेरा बुर्का खोला और बोला- आज वो दिन आया है, जिसका मैं बरसों से इंतज़ार कर रहा था.

और फिर तो वो मेरे कपड़े उतारता गया, और मैं चुपचाप खड़ी उसे सब कुछ करने देती गई।

मुझे बिल्कुल नंगी करके उसने अपने कपड़े उतारे, और मेरी कमर के गिर्द अपनी बांहें लपेट कर एक झटके में उसने मुझे बिस्तर पर गिरा लिया। मैं तो एक बेजान गुड़िया की तरह उसकी सुपुर्दगी में थी कि जो चाहो कर लो आज।

उसने मुझे बिस्तर पर लेटा कर सर से पाँव तक मुझे चूमा और फिर आफताब बोला- घोड़ी बनोगी ?

घोड़ी तो मैं अपने शौहर के लिए भी अक्सर बनती थी तो मैं घोड़ी बन गई।

वो मेरे कूल्हों पर हाथ फिरा कर बोला- भर गई हो, पहले तुम्हारी गांड इतनी भारी नहीं थी।
मैंने कहा- हाँ, मेरा ब्रा और पेंटी का साइज़ दो नंबर बढ़ गया है। भारी तो होऊंगी ही।

वो बोला- इतनी खूबसूरत, इतनी सेक्सी औरत जिसके पास हो, और वो उसे ढंग से चोद भी न सके तो क्या फायदा।
मैंने कहा- नहीं, वो तो बहुत अच्छे से करते हैं, मैं बहुत खुश हूँ उनसे।
वो बोला- तो फिर दिक्कत कहाँ हुई ?
मैंने कहा- उनके माल में कमी है कोई … जिसका इलाज चल रहा है।
वो बोला- ओके, तो फिर हम कोशिश करके देखते हैं।
मैंने हाँ में सर हिलाया।

उसने मेरी टांगें खोली और साफ चिकनी गुलाबी चूत को देखने लगा। मैंने उसे अपने हाथों से ढक लिया।
वो बोला- क्या करती है, देखने दे।
मैंने कहा- मुझे शर्म आती है।
वो बोला- नंगी होने के बाद कोई शर्म बाकी नहीं रहती, हाथ हटा मुझे देखने।

मैंने हाथ नहीं हटाये तो उसने खुद हटा दिया और फिर चूत के आस पास सब जगह उसने चूमा और फिर अपनी जीभ मेरी चूत की फांक में घुमाई।
“आह…” मैंने आँखें बंद कर ली.

वो मेरी चूत को चाटने लगा और मैं नीचे से अपनी कमर को हिलाने लगी।
कुछ देर चाटने के बाद मैंने कहा- बस करो मेरी जान, ऊपर आ जाओ अब !

वो उठा और मेरे ऊपर आ गया, मैंने उसका लंड पकड़ कर अपनी चूत पर रखा, और उसने अंदर घुसेड़ने के लिए हल्का सा ज़ोर लगाया और उसका कड़क लंड मेरी मोहब्बत, मेरी वफा, मेरी आबरू की धज्जियां उड़ाते हुये मेरी चूत के अंदर घुस गया।

“उम्म्ह… अहह… हय… याह…” आज मैं अपने प्यारे शौहर और उसके खानदान की सारी इज्ज़त को लुटा बैठी। आफताब मेरे जिस्म को अपनी पूरी गिरफ्त में लेकर बड़े आराम से मुझे चोदने लगा।

मुझे भी खूब मज़ा आ रहा था तो मैं भी नीचे से अपनी कमर को उठा उठा कर उसके लंड को अपनी चूत में खुलेआम आने जाने का रास्ता दे रही थी। जब भी वो अपना लंड मेरी चूत की गहराई में उतारता मेरे मुँह से एक ‘आह…’ निकलती।
मैं उसके कंधों को सहलाती उसकी पीठ पर अपने नाखूनों से निशान बना रही थी।

जैसे जैसे उसकी चुदाई से मुझे जोश चढ़ रहा था, मेरे मुँह से ना जने क्या क्या निकल रहा था। मैंने उसके कंधों से लेकर उसके चूतड़ों तक उसकी सारी पीठ खरोंच दी।
और उसने भी मेरे मम्मों पर, मेरे कंधों पर, बांहों पर काट काट कर निशान ही निशान डाल दिये। गर्दन और पेट की बीच मेरा सारा बदन लव बाइट्स से भर दिया उसने।

जब मेरा पानी गिरने वाला हुआ, तो मैंने उसका सीने पर एक निप्पल को अपने दाँतों से काट लिया और उसके जिस्म से चिपक गई। जब से शौहर बाहर गए थे, उसके बाद पहली बार मैं चुदी थी। फिर जब थोड़ी देर बाद आफताब का हुआ, तब वो भी बहुत भड़का, मुझे खूब गालियां दी- ले साली कुतिया, मादरचोद, ले अपने यार का माल ले अपनी चूत में! देख रंडी अब मैं तुझे कैसे माँ बनाता हूँ। भैन की लौड़ी, देख मेरे लौड़े से तू जानेगी, हराम की बीज। अपने पति का नहीं अपने यार का बच्चा जानेगी, तू साली रांड। ले चुद, कुतिया, ले चुद!

और मैं नीचे लेटी- चोद मेरी जान, ज़ोर से चोद अपनी रंडी को, मार ज़ोर से धक्का मार … और पेल … ज़ोर से पेल !
बोल बोल कर उसका हौंसला बढ़ा रही थी।

फिर आफताब का माल गिरा, मुझे बहुत अच्छे से महसूस हुआ जब उसके लंड से निकालने वाले गर्म गाढ़े माल की पिचकारियाँ मेरी बच्चेदानी पर पड़ी। मैंने तभी दुआ की कि इस बार मैं ज़रूर प्रेग्नेंट हो जाऊँ।
पानी निकालने के बाद आफताब मेरे ऊपर ही गिर गया। मैं बहुत खुश थी इस उम्मीद से कि अब मैं माँ बन जाऊँगी।

उसके बाद एक बार और मुझे चोदा आफताब ने।

फिर तो हमारी ये रूटीन ही बन गई। मैं करीब हर दूसरे तीसरे दिन उससे चुदवाने जाती। जब तक मेरे शौहर विदेश से वापिस नहीं आए, मैंने अपनी चूत को आफताब के गर्म माल से खूब भरवाया। जब शौहर आए तो उनसे भी खूब सेक्स किया।

दिन में मैं चोरी से जाकर आफताब से चुदवा कर आती, रात को शौहर से चुदवाती। फिर इंतज़ार करती के कब मेरे दिन ऊपर हों, और फिर मैं अपना प्रेग्नेंसी टेस्ट करवाऊँ।
मगर पता नहीं क्यों अभी ऊपर वाला मेरे पर मेहरबान नहीं हो रहा था।

धीरे धीरे मुझे होटल वाले भी पहचानने लगे थे, क्योंकि कभी कभी मौका ऐसा होता के होटल का कोई न कोई वेटर या मैनेजर मुझे देख लेता।

और आफताब और मैं इतना सेक्स कर चुके थे कि हम में प्यार मोहब्बत वाली फीलिंग खत्म सी हो चुकी थी। हम होटल में जाते, जाते ही सेक्स करते और वापिस अपने अपने घर चले जाते।

मगर यहीं से मेरे जीवन का काला दौर शुरू हुआ, वो कैसे हुआ, वो मैं आपको अपनी कहानी के अगले भाग में बताऊँगी।

कहानी जारी रहेगी.

shaheen.sheikh1098@gmail.com

Other stories you may be interested in

पति ने कराई मेरी चूत की चुदाई जीजू से

मेरा नाम कलावती अशोक कलाल (बदला हुआ) है. मैं इंदौर की रहने वाली हूं. मैं एक शादीशुदा औरत हूं. इस कहानी में सच के अलावा कुछ और नहीं है. मैंने अन्तर्वासना को अपनी आत्मकथा बताने का जरिया बनाया है. मैं […]
Full Story >>>

भाभी को प्यार से चोदा-2

अब तक की सेक्स कहानी भाभी को प्यार से चोदा-1 में आपने पढ़ा कि एक नवविवाहित भाभी मुझे एक पार्टी में मिली. उनसे दोस्ती होने के बाद हम दोनों ने काफी समय तक चैट की और आखिर में मैं अपने […]
Full Story >>>

अंधेरे में चुद गई अनजान मर्द से

दोस्तो, मेरा नाम सुनीता शर्मा है, और मैं अभी 37 साल की हूँ। 37 साल ये वो उम्र है, जब आपके बच्चे बड़े हो चुके होते हैं, वो अपनी बहुत सी जिम्मेवारियाँ खुद उठा लेते हैं और आप काफी हद […]
Full Story >>>

भाभी को प्यार से चोदा-1

दोस्तो और मेरी सेक्सी भाभियो, कैसी हो आप सब ! मैं एक बार फिर से आपकी चुत में लंड का मजा देने के लिए हाजिर हूँ. सेक्सी भाभियो और हॉट लड़कियो, अपनी चूतों से पानी निकलवाने के लिए यश के लंड […]
Full Story >>>

नए ऑफिस में चुदाई का नया मजा-1

दोस्तो, मेरा नाम फेहमिना इक़बाल है। मेरी सभी कहानियों के लिए आप सबने मेल के जरिये अपना बहुत सारा प्यार मुझे दिया. मेरी पिछली कहानी भाई बहन ने जन्मदिन का तोहफा दिया को बहुत सारे लोगों ने पसंद किया था […]
Full Story >>>